टिप्पणी

12

रेडियो कार्यक्रम निर्माण

यदि आप कभी–कभार रेडियो सुनते हैं तब भी कुछ कार्यक्रम आपको याद होंगे। वे आपको इसलिए याद हैं क्योंकि आप उन्हें पसंद करते हैं। कार्यक्रम रुचिपूर्ण रहे हैं इसलिए आपने उन्हें पसंद किया है। लेकिन अधिकांश कार्यक्रम आप याद नहीं रख पाते क्योंकि जो कुछ भी आप सुनते हैं वह तेजी से बाद में भूलता जाता है। हमने रेडियो की इस विशेषता पर 'रेडियो की विशेषताएँ' अध्याय में चर्चा की है।

कोई कार्यक्रम रुचिपूर्ण तभी होता है जब उसका निर्माण अच्छी तरह से किया जाय। रेडियो कार्यक्रम निर्माण बहुत विस्तार लिए हुए है। प्रौद्योगिकी में निरंतर होते बदलाव के अनुरूप रेडियो कार्यक्रम निर्माण की तकनीक में भी बदलाव होते रहते हैं। लेकिन मूल बातें समान रहती हैं। हो सकता है कि आपका विचार अच्छा हो, स्क्रिप्ट अच्छी हो तथा स्वर भी अच्छे हों लेकिन यदि इनका निर्माण सही तरीके से नहीं होगा तो वह श्रोताओं की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकेगा।

इस अध्याय में आप रेडियो कार्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया तथा उसके विविध पक्षों को जान सकेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरांत आप कर सकेंगे–

- रेडियो निर्माता के लिए आवश्यक गुणों का वर्णन
- रेडियो कार्यक्रम निर्माण के मुख्य तत्वों की व्याख्या
- माइक्रोफोन के तीन मुख्य प्रकारों में अंतर करना
- रेडियो कार्यक्रम निर्माण हेतु संगीत तथा ध्वनि प्रभाव की पहचान

टिप्पणी

- कार्यक्रम निर्माण के विभिन्न स्तरों का वर्गीकरण
- कार्यक्रम निर्माण में स्क्रिप्ट की उपयोगिता की पहचान

12.1 रेडियो कार्यक्रम निर्माता के गुण

आपने शायद ध्यान दिया हो कि खाना तो सभी बनाते हैं पर कुछ लोगों के हाथ के बने खाने का स्वाद बेहतरीन होता है। इसी तरह रेडियो कार्यक्रम बनाने वाले सभी लोग अच्छा और मनोरंजक कार्यक्रम नहीं बना पाते। रेडियो कार्यक्रम निर्माता के रूप में सफल होने के लिए आपमें कुछ निश्चित योग्यता होनी चाहिए। आपको जिन योग्यताओं की आवश्यकता होगी वे निम्नांकित हैं—

(क) **आसपास की घटनाओं की अच्छी समझ :** यह योग्यता आपके अंदर चीजों तथा घटनाओं के प्रति आपकी ललक को स्पष्ट करती है। हम इसे जिज्ञासा कह सकते हैं। जिज्ञासाशक्ति के अभाव में कोई व्यक्ति अच्छा कार्यक्रम निर्माता नहीं बन सकता। ऐसा इसलिए क्योंकि आपको रुचिकर कार्यक्रम बनाने के लिए अच्छे विचारों की आवश्यकता पड़ती है। आपको यह विचार कैसे प्राप्त होते हैं? इसके विषय में सोचिए। प्रथमतः, हमें घटनाओं, परिस्थितियों के अवलोकन से विचार मिलते हैं। क्या आपको आइजेक न्यूटन के जीवन की घटना याद है जिसमें उसने सेब को पेड़ से नीचे गिरते देखा था? इस अवलोकन ने न्यूटन को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि सेब पेड़ से नीचे ही क्यों गिरा, ऊपर क्यों नहीं गया? इसका परिणाम न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के रूप में सामने आया।

आइए इसे एक और उदाहरण से समझें। जेम्स वॉटसन केतली में पानी गरम कर रहा था। केतली से वाष्प शक्ति के साथ ढक्कन हटाकर निकल रही थी। उसने सोचा कि वाष्प की शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। इससे वाष्पचालित इंजन के विकास का रास्ता निकला।

अतः आप विचार विकसित कर सकते हैं—

(i) परिस्थितियों, घटनाओं का, जैसा कि वर्णन किया गया है, अवलोकन करके।

(ख) **अनुभवों का अंकन करके**—हमें जीवन में खट्टे–मीठे अनुभव होते हैं। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के रचनाकार ज्यादातर अपने अनुभवों के आधार पर रचना करते हैं। महाकवि वाल्मिकी ने मरणासन्न पक्षी के जोड़े को देखा तो उन्हें दुख हुआ जिससे उन्होंने कविता लिखी। अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ ने फूलों (डहेलिया) को हवा में झूमते हुए देखा और सर्वश्रेष्ठ कविताओं में से एक की रचना की। हम अपने अनुभवों से और दूसरों के अनुभवों से प्रेरणा लेकर विचारों को विकसित कर सकते हैं।

टिप्पणी

(i) आपने अभी अन्य लोगों के अनुभवों के विषय में पढ़ा। आप दूसरों के अनुभव कैसे जान सकते हैं। इसके लिए लोगों से बात करनी होगी तथा उनकी समझ एवं अनुभव का अंदाजा लगाना होगा।

(ग) **विचारों को मूर्त रूप देने की क्षमता**—आपके पास ढेरों विचार एकत्र हो सकते हैं। आपको उन्हें एक स्वरूप प्रदान करना तथा स्क्रिप्ट में बदलना होगा।

(घ) **रचनात्मकता**—रचनात्मकता से आप क्या समझते हैं? यह वह गुण है जो हम सभी में व्याप्त है। लेकिन किसी विचार को इस रूप में प्रस्तुत करके कि वह लोगों को पसंद आए, इसके लिए आपसे रचनात्मकता की अपेक्षा होगी। रचनात्मकता को हम कुछ नया या कुछ विशिष्ट तरीके से करने के रूप में स्पष्ट कर सकते हैं। एक ही विचार रेडियो कार्यक्रम में अलग–अलग लोग अलग–अलग तरीके से प्रस्तुत करते हैं। यदि सभी लोग एक ही तरीके से चीजों को प्रस्तुत करेंगे तो एकरसता आ जाएगी तथा वह मनोरंजक या रुचिकर नहीं होगा।

(च) **शब्दों का अच्छा प्रयोग करने की क्षमता**—आपको आवश्यकता के अनुरूप सही शब्दों का चुनाव करना आना चाहिए। रेडियो कार्यक्रम स्क्रिप्ट पर निर्भर करते हैं तथा एक अच्छी स्क्रिप्ट आपके लिखने की क्षमता पर निर्भर करती है। इसके लिए आपके पास शब्दों का अच्छा भंडार होना चाहिए। आपको शब्दों का सही तरीके से प्रयोग करना चाहिए। हम इस विषय पर आगे चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 12.1

(1) एक अच्छे रेडियो कार्यक्रम निर्माता के लिए आवश्यक तीन गुणों को सूचीबद्ध करें।

(2) रेडियो कार्यक्रम निर्माता विचारों को कैसे प्राप्त करता है?

12.2 रेडियो कार्यक्रम निर्माण के तत्व

आपने रेडियो फॉर्मेट के तत्वों का अध्ययन कर लिया है। क्या आप उन्हें याद कर सकते हैं? यह तत्व हैं—

(क) मानव स्वर या उच्चारित शब्द

(ख) संगीत

(ग) ध्वनि

रेडियो फॉर्मेट के इन्हीं तत्वों से रेडियो कार्यक्रम निर्माण के विविध तत्व प्राप्त होते हैं।

आइए हम रेडियो कार्यक्रम निर्माण के विविध तत्वों का परिचय प्राप्त करें।

(i) **स्टूडियो**– पूर्व के अध्याय में आपको बताया जा चुका है कि रेडियो स्टूडियो वह जगह होती है जहाँ रेडियो कार्यक्रम ध्वन्यांकित (रिकॉर्ड) किए जाते हैं। रेडियो कार्यक्रम निर्माण के लिए एक शोरमुक्त स्टूडियो की आवश्यकता होती है जहाँ मानवीय स्वरों का ध्वन्यांकन हो सके या उनका सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रसारण हो सके।

(ii) **माइक्रोफोन :** स्वर का ध्वन्यांकन करने के लिए हम माइक्रोफोन नामक उपकरण का प्रयोग करते हैं। वह हमारे स्वर को ऊँचा उठाते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो हमारा स्वर और स्पष्ट होता है। आप यदि माइक्रफोन पर बोल रहे हैं तो आपको आवाज ऊँची नहीं करनी होती है। आप सामान्य स्वर में बोलेंगे तथा आवाज लाउडस्पीकर पर सुनने पर ऊँची हो जाएगी। रेडियो के संदर्भ में माइक्रोफोन कार्यक्रम को प्रस्तुत करने में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है।

माइक्रोफोन मूल रूप से तीन प्रकार के होते हैं जिन्हें उनकी दिशामूलकता के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। आप जब अग्रांकित विवरण पढ़ेंगे तब दिशामूलकता शब्द का अभिप्राय स्पष्ट हो जाएगा।

(क) **एक-दिशामुखी (यूनी डायरेक्शनल) माइक्रोफोन**–जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह माइक्रोफोन दिशा विशेष से स्वर ग्रहण करता है। आप इसके सामने से बोलेंगे तो यह आपका स्वर ग्रहण कर लेगा। लेकिन आप इसके दूसरी ओर से बोलेंगे तो यह आपकी आवाज ठीक से ग्रहण नहीं करेगा। रेडियो स्टूडियो में उद्घोषक, प्रस्तोता तथा समाचार वाचक इस तरह के माइक्रोफोन का प्रयोग करते हैं।

माइक्रोफोन बहुत संवदेनशील होता है अतः इसका उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए। बोलते समय आपके और माइक्रोफोन के बीच में सही दूरी होनी चाहिए। ऐसा नहीं होने पर आपकी आवाज की स्पष्टता ठीक से नहीं आएगी। यहाँ तक कि बोलते समय यदि कागज या गहरी साँस लेने की ध्वनि भी होती है तो माइक्रोफोन इसे पकड़ लेगा तथा इससे आपके स्वर की स्पष्टता भी प्रभावित होगी।

(ख) **द्वि-दिशामूलक (बाई-डायरेक्शनल) माइक्रोफोन**– इस माइक्रोफोन की विशेषता भी इसके नाम के अनुरूप है। यह दो दिशाओं से स्वर या ध्वनि पकड़ सकता है। रेडियो साक्षात्कार के ध्वन्यांकन के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(ग) **बहु-दिशामूलक (ओम्नी डायरेक्शनल) माइक्रोफोन**–आप बहु–दिशा शब्द समझ रहे होंगे। हम कहते हैं कि भगवान हर जगह (बहु–दिशा) मौजूद हैं। बहु–दिशामूलक माइक्रोफोन हर तरफ से ध्वनि या स्वर ग्रहण कर सकता है। जब किसी रेडियो कार्यक्रम जैसे रेडियो नाटक, परिचर्चा आदि में बहुत सी आवाजें एक जगह ध्वन्यांकित करनी होती हैं, तो इस तरह का माइक्रोफोन प्रयुक्त होता है।

टिप्पणी

माइक्रोफोन के अन्य प्रकार भी होते हैं जो विभिन्न आकार तथा लंबाई के होते हैं। आपने टीवी कार्यक्रमों में देखा होगा की एक छोटा सा माइक्रोफोन बोलने वाले के कॉलर या कपड़ों के किनारे (गले के पास) लगा होता है। इसे लैपल माइक कहते हैं जो वास्तव में एक–दिशामूलक माइक्रोफोन होता है। यह माइक्रोफोन सामान्यतः रेडियो के लिए प्रयुक्त नहीं होते। खेल सम्बन्धी कार्यक्रमों में ज्यादा लंबाई वाले माइक्रोफोन प्रयोग किए जाते हैं जिन्हें गन माइक्रोफोन कहते हैं। यह सामान्यतः बहु–दिशामूलक होते हैं। एक अन्य प्रकार कॉर्डलेस माइक्रोफोन का है। इनके साथ केबल या तार लगाने की आवश्यकता नहीं होती। इनमें एक सूक्ष्म ट्रांसमिटर छुपा होता है जो ध्वनि को एम्प्लीफायर तक पहुँचाने का काम करता है।

चित्र 12.1 : माइक्रोफोन

(iii) **ध्वनि प्रभाव**– ध्वनि प्रभाव से रेडियो पर किसी स्थिति का आभास होता है। यह कार्यक्रम में वास्तविकता का पुट देता है तथा श्रोता की कल्पनाशीलता को राह दिखाता है। किसी भीड़ भरे बाजार या मंदिर के बारे में सोचिए। अगर रेडियो कार्यक्रम में आपको यह दृश्य ध्वन्यांकित करना है तो उसके लिए आपको बाजार या मंदिर जाने की आवश्कयता नहीं है। आप उन ध्वनियों को अंकित (रिकार्ड) कर उनका उपयोग कर सकते हैं। वैसे सामान्यतया पहले से तैयार ध्वनि प्रभावों का उपयोग होता है। ध्वनि प्रभाव का दो रूपों में उपयोग होता हैं–

(क) तात्कालिक प्रभाव या वह प्रभाव जो बोलते समय उत्पन्न होते हैं।

(ख) पूर्व ध्वन्यांकित ध्वनि प्रभाव।

आप यदि कोई कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं जिसमें दरवाजा खटखटाने के आवाज की जरूरत है तो इसके लिए आप दरवाजे की खटखटाहट या लकड़ी के टुकड़े पर खटखटाकर यह प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। इसी तरह बोतल से गिलास में पानी डालने की वास्तविक आवाज आप उपयोग कर सकते हैं। लेकिन अगर आपको शेर की गुर्राहट या कुत्ते के भौंकने की आवाज ध्वन्यांकित करनी है, तो इसके लिए आप स्टूडियो में कुत्ता या शेर नहीं ला सकते। यहाँ हम पूर्व–ध्वन्यांकित तथा टेप या डिस्क में सुरक्षित इस तरह की आवाज का उपयोग कर सकते हैं। आजकल सीडी में हर तरह की आवाजें उपलब्ध हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हैं। कुछ विशेष कंप्यूटर सॉफ्टवेयर पर भी यह सुविधा उपलब्ध है।

आप ध्वनि प्रभाव पैदा भी कर सकते हैं।

आप नारियल के दो खोखों से घोड़े के हिनहिनाने की आवाज उत्पन्न कर सकते हैं।

आप सेलोफाइन कागज या एल्यूमिनियम रैपर लीजिए तथा माइक्रोफोन के सामने उन्हें तोड़िए। इस ध्वनि को अंकित कर सुनिए। यह आग जलने की आवाज का आभास देगा। आप खुद भी इस तरह के अनेक ध्वनि प्रभाव विकसित कर सकते हैं।

ध्वन्यांकन में सावधानी रखनी चाहिए। हो सकता है कि दरवाजा वास्तव में खोलकर जो ध्वन्यांकन किया जाय उससे वह आवाज ही नहीं प्राप्त हो। अतः ध्वनि का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है न कि वह ध्वनि वास्तविक रूप से प्राप्त हुई या नहीं।

(iv) **संगीत**– संगीत रेडियो की आत्मा है। जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, रेडियो में इसका उपयोग कई रूपों में होता है। फिल्मगीत तथा शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम रेडियो पर स्वतंत्र रूप से प्रसारित होते हैं। संगीत का विभिन्न रेडियो कार्यक्रमों में सिग्नेचर ट्यून या थीम म्यूजिक के रूप में भी उपयोग होता है।

आइए देखें संगीत की किसी कार्यक्रम के लिए क्या उपयोगिता है–

क) संगीत किसी भी केवल शब्द या ध्वनि पर निर्भर कार्यक्रम में रंग वैविध्य तथा जीवन्तता का समावेश करता है।

टिप्पणी

ख) संगीत एकरसता नहीं आने देता।

ग) संगीत भावों, जैसे सुख–दुख, डर या आनन्द आदि को प्रभावी तरीके से उभारता है।

घ) संगीत स्थान तथा परिस्थितियों का भी संकेतक है। मान लीजिए आपको एक खुशनुमा सुबह प्रस्तुत करनी है। इसे बाँसुरी की मंद सुमधुर स्वर लहरी तथा चिड़ियों की चहचहाहट से रचा जा सकता है।

(v) **बनावटी प्रतिध्वनि**– यदि आप किसी खाली इमारत या किले में जाकर जोर से चिल्लाते हैं, तो आपकी आवाज आप तक वापस आती है। इसे प्रतिध्वनि कहते हैं। प्रतिध्वनि का प्रयोग रेडियो कार्यक्रमों में होता है। यह एक तकनीकी समावेश है।

(vi) **छनना तथा भ्रंशन**– आपसे कोई फोन पर बात करता है, तो उसकी आवाज स्वाभाविक नहीं होती। यह भ्रंशन होता है जो प्रौद्योगिकी के उपयोग से होता है। स्वर के भ्रंशन को कई बार प्रतिध्वनि के साथ प्रयोग किया जाता है। जैसे कोई यदि 100 फीट गहरी खान के अंदर से बोल रहा है तो इसे वास्तविक बनाने के लिए भ्रंशन तथा प्रतिध्वनि का प्रयोग होगा।

(vii) **मानवीय स्वर**– किसी भी रेडियो कार्यक्रम का मुख्य तत्व मानवीय स्वर होता है। किसी रेडियो समाचार वाचक या उद्घोषक के स्वर के बारे में सोचिए। वह सुनने में काफी आकर्षक तथा स्पष्ट होता है। ऐसा उनके स्वर की गुणवत्ता तथा उसके उचित उपयोग से होता है। रेडियो कार्यक्रम निर्माण में मानवीय स्वर के प्रयोग के दो पक्ष होते हैं। पहला जो कुछ भी बोला जाना है उसकी एक अच्छी तरह से तैयार स्क्रिप्ट हो तथा दूसरा माइक्रोफोन के समक्ष इसे बोला जाय या पढ़ा जाय।

पाठगत प्रश्न 12.2

(1) ध्वन्यांकन के लिए प्रयुक्त माइक्रोफोन के विविध प्रकारों का उल्लेख करें।

(2) निम्नांकित का केवल एक शब्द में उत्तर दें:–

(i) लैपल माइक्रोफोन किस प्रकार का माइक्रोफोन होता है?

(ii) छनना प्रभाव (फिल्टर इफेक्ट) को और क्या कहा जाता है?

(iii) रेडियो कार्यक्रम निर्माण हेतु कैसा स्टूडियो आवश्यक है?

(iv) हम बोलते हैं तो किस तरह के ध्वनि प्रभाव बनते हैं?

(v) रेडियो कार्यक्रम में प्रयुक्त किसी एक तकनीकी समावेश का उदाहरण दें।

टिप्पणी

12.3 रेडियो कार्यक्रम निर्माण

अब हम रेडियो कार्यक्रम निर्माण के विभिन्न स्तरों का अध्ययन करेंगे।

हमें जो भी करना है उसकी एक स्पष्ट योजना होनी चाहिए। रेडियो कार्यक्रम तैयार करने की भी एक सुपरिभाषित प्रक्रिया है जिसके तीन स्तर होते हैं—

क) निर्माण पूर्व या प्री प्रोडक्शन

ख) निर्माण या प्रोडक्शन

ग) निर्माण पश्चात या पोस्ट प्रोडक्शन

(क) निर्माण पूर्व— जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह प्रथम स्तर है जो मुख्य निर्माण कार्य से पूर्व आता है। इसमें निम्न का समावेश होता है—

(i) कहानी या विचार का विकास—इस स्तर पर किसी कार्यक्रम की विषयवस्तु निर्धारित होती है। कार्यक्रम में किस विषय का वर्णन होगा यह इसमें निर्धारित होता है।

(ii) कार्य की रूपरेखा—विषयवस्तु के निर्धारण के पश्चात कार्य की रूपरेखा निर्धारित की जाती है। यहाँ कार्यक्रम का फॉर्मेट निश्चित हो जाता है यानी यह वार्ता, परिचर्चा, साक्षात्कार, नाटक, डाक्यूमेंट्री आदि क्या होगा। यह निर्धारित होने के बाद स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय, प्रस्तुति के लिए उपयुक्त लोगों का चयन कर लिया जाता है। कार्य की रूपरेखा में स्टूडियो से बाहर ध्वन्यांकन के उपकरण, ध्वन्यांकन का समय, स्थान आदि भी निर्धारित कर लिया जाता है।

(iii) स्क्रिप्ट—इसका परीक्षण किया जाता है कि यह प्रसारण के लिए उपयुक्त है अथवा नहीं। यह परीक्षण रेडियो के लिए लेखन के सिद्धांतों या स्क्रिप्ट की श्रवणीयता के आधार पर होता है। हम आगे इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

(iv) आवश्यक कागजी औपचारिकताएँ—यदि कार्यक्रम में लेखन या स्वर ध्वन्यांकन आदि के लिए रेडियो स्टेशन में कार्यरत लोगों के अतिरिक्त बाहर से लोगों को बुलाना है, तो उन्हें आमंत्रित करके उनके साथ एक सहमतिपत्र तैयार करना आवश्यक होता है। इस तरह के सहमतिपत्र को 'कॉन्टैक्ट' कहते है। इसी प्रकार साक्षात्कार आधारित कार्यक्रमों के लिए साक्षात्कार हेतु व्यक्ति से पूर्व अनुमति लेनी होती है। इससे स्पष्ट होता है कि निर्माण पूर्व स्तर पर बहुत सारी कागजी औपचारिकताएँ आवश्यक होती हैं।

टिप्पणी

(v) वक्ताओं के स्वर का अभ्यास भी इस अवस्था में होता है।

ख) **निर्माण की अवस्था**— यह रेडियो कार्यक्रम के ध्वन्यांकन तथा संपादन की वास्तविक अवस्था है। समुचित रूप से स्टूडियो, माइक्रोफोन, कंप्यूटर तथा सॉफ्टवेयर आदि की आवश्यकता कार्यक्रम के ध्वन्यांकन तथा संपादन हेतु पड़ती है।

ग) **निर्माण पश्चात अवस्था**— कार्यक्रम निर्माण में लगे लोगों के सूचनार्थ लेखन इस अवस्था का प्रमुख कार्य है। कार्यक्रम का रेडियो तथा अन्य माध्यमों पर प्रचार भी होना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होता है कि लोगों को कार्यक्रम के विषय में जानकारी मिल जाय तथा ज्यादा से ज्यादा लोग इसे सुनें। कार्यक्रम प्रस्तुति हेतु उद्घोषणा भी लिखी जाती है तथा कार्यक्रम प्रसारण के लिए उपलब्ध कराई जाती है।

12.4 रेडियो के लिए लेखन

पूर्व खंड में आपने सीखा कि रेडियो स्क्रिप्ट का परीक्षण रेडियो के लिए लेखन के सिद्धांतों के आधार पर होता है। आइए अब हम रेडियो कार्यक्रम में स्क्रिप्ट की महत्ता पर चर्चा करें।

क्या होता है जब आप अपने पसंदीदा उद्घोषक को रेडियो पर बोलते हुए सुनते हैं?

आप चाहेंगे कि आप उद्घोषक को सुनना जारी रखें।

लेकिन क्यों?

क्योंकि वह जो कह रहा है तथा जिस तरीके से कह रहा है

वह आपको पसंद है।

क्या आप ऐसा नहीं करते?

वह जो कहते हैं प्रायः वह पूर्व में ही लिखा गया होता है। उनकी प्रस्तुति की शैली स्वर उपयोग की योजना का अनुसरण होता है।

अब हम रेडियो के लिए प्रयुक्त भाषा पर चर्चा करेंगे।

जब हम रेडियो की भाषा कहते हैं, तो कोई भाषा विशेष जैसे हिंदी या अंग्रेजी की ओर संकेत नहीं करते बल्कि भाषा की शैली के बारे में कहते हैं जो रेडियो में उपयोग होती है। रेडियो में आप पाएँगे कि जो भाषा प्रयुक्त होती है वह प्रिंट मीडिया या समाचारपत्र और पत्रिकाओं की भाषा से अलग होती है।

टिप्पणी

प्रिंट मीडिया में सारा वर्णन लिखा जाता है जो मुद्रित होता है तथा समाचारपत्र या पत्रिका के पृष्ठों में मौजूद होता है। इन्हें आप जब तक चाहें सुरक्षित रख सकते हैं। आप अपनी सुविधानुसार इन्हें किसी भी समय पढ़ सकते हैं। यदि आपको एक बार पढ़कर बात समझ में नहीं आती है तो आप इसे दोबारा पढ़ और समझ सकते हैं। यदि आपको किसी शब्द का अर्थ नहीं समझ में आ रहा है तो आप शब्दकोष की सहायता ले सकते हैं।

अब रेडियो पर ध्यान दीजिए। कार्यक्रम आप तभी सुनते हैं जब उनका प्रसारण होता है। आप केवल एक बार उन्हें सुनते हैं। आप कह सकते हैं कि हम इन्हें रिकॉर्ड करके सुन सकते हैं। प्रसारण के समय रिकॉर्ड करके बाद में सुना जा सकता है। लेकिन सामान्यतः ऐसा नहीं होता। हमारी दैनन्दिन बातचीत में एक व्यक्ति बोलता है तो दूसरा सुनता है तथा दूसरा बोलता है, तो एक व्यक्ति सुनता है। यह एक संक्षिप्त अनुभव होता है। आप याद रख पाएँ या नहीं रख पाएँ कि आपने क्या कहा या क्या सुना था।

इसी प्रकार रेडियो पर एक बार आप जो भी सुनते हैं उसका अधिकांश भूल जाते हैं। क्या आपके स्वयं द्वारा कल बोली गई बातें आज याद हैं? साथ ही कल जो आपने दूसरों से सुना था वह याद है? निश्चित तौर इसका उत्तर नहीं होगा।

हम अपने रोजाना के वार्तालापों में उन शब्दों तथा शैली का प्रयोग नहीं करते जो समाचारपत्र संपादकीय, रूपक या लेखों में प्रयोग करते हैं। क्या आपने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए क्योंकि वह शब्द वार्तालाप में स्वाभाविक तथा सुबोध नहीं होते। अब उनकी अपने दैनन्दिन वार्तालाप से तुलना करें। आप सरल शब्दों, वाक्यों तथा भावों का प्रयोग करते हैं। आप जिससे बात कर रहे हैं उस पर पूरा ध्यान भी देते हैं। आपकी भाव–भंगिमाएँ तथा मुद्राएँ आपके वार्तालाप के अनुकूल होती हैं।

अब आइए पुनः आपके पसंदीदा उद्घोषक की बात करें। आपने उस व्यक्ति को देखा नहीं है। लेकिन आपको लगता है कि वह आपसे बात कर रहा है। आप कुछ कहते नहीं लेकिन उस व्यक्ति से कुछ समीपता महसूस करते हैं। इसी तरह, प्रायः आप जो कुछ भी रेडियो पर सुनते हैं, उसे पहले लिखा जाता है या उसकी स्क्रिप्ट तैयार की जाती है। इसे पढ़ा जाता है तथा केवल एक बार सुना जाता है।

उपरोक्त के आधार पर हम निम्नांकित निष्कर्ष निकाल सकते हैं–

– रेडियो पर हम व्यक्ति को केवल सुनते हैं, उसे देख नहीं सकते।

– व्यक्ति पूर्व में तैयार स्क्रिप्ट के आधार पर बोलता है।

– आपको लगता है कि व्यक्ति आपसे बात कर रहा है।

टिप्पणी

– व्यक्ति आपको मित्रवत् लगता है तथा जो कह रहा है उसे सुनने में आपको कोई परेशानी नहीं होती।

– रेडियो स्क्रिप्ट में प्रयुक्त शब्दों को आप उच्चारण हेतु शब्द के रूप में समझ सकते हैं जबकि प्रिंट मीडिया में लिखित या मुद्रित शब्द प्रयुक्त होते हैं।

प्रिंड मीडिया में प्रयुक्त शब्द आँखों के लिए होते हैं, तो रेडियो के शब्द विशेषरूप से श्रवणेन्द्रिय या कानों के लिए होते हैं।

उच्चारण हेतु विशेषीकृत शब्दों की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं–

(i) हालांकि यह लिखा जाता है पर बोलने के लिए होता है।

(ii) यह कानों के लिए होता है, आँखों के लिए नहीं।

(iii) यह केवल एक बार सुना जा सकता है। सामान्यतः सुनने के लिए दोबारा यह उपलब्ध नहीं होता।

(iv) यह बातचीत की शैली के अनुरूप होता है तथा स्पष्ट होता है। इसके गुण निम्नांकित हैं–

(क) इसमें सरल शब्दों का प्रयोग होता है कठिन तथा जटिल शब्दों का नहीं।

(ख) वाक्य छोटे तथा सरल हों जटिल नहीं।

(ग) एक वाक्य में केवल एक विचार हो, अनेक नहीं।

(घ) हालांकि रेडियो कार्यक्रम एक समय में हजारों लोग सुनते हैं। लेकिन जो कुछ लिखा जाय उसे एक श्रोता को ध्यान में रखकर लिखना चाहिए। श्रोता के रूप में भी सामान्यतः एक या दो लोग होते हैं, भीड़ रेडियो नहीं सुनती। अतः इसमें एक व्यक्ति से वार्तालाप आधार होना चाहिए।

(च) शब्द सीधे–सीधे अर्थ स्पष्ट करते हों, वे सांकेतिक या अस्पष्ट नहीं हों।

(छ) शब्दों में श्रोता के मन में चित्र बनाने की क्षमता होनी चाहिए।

(ज) संक्षिप्त नामों का प्रयोग यथासंभव नहीं करना चाहिए। यदि इनका प्रयोग करना हो तो पूर्ण नाम भी दिया जाना चाहिए।

(झ) यदि स्क्रिप्ट में दशमलव पश्चात् संख्या हो तो उसे उपर्युक्त पूर्णांक या पूर्ण संख्या में परिवर्तित कर देना चाहिए।

(ट) एक से अधिक व्यक्तियों के संदर्भ में 'वह' के प्रयोग से बचना चाहिए। इससे श्रोता को भ्रम हो सकता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 12.3

(1) रेडियो कार्यक्रम निर्माण की विभिन्न अवस्थाएँ बताइए। प्रत्येक अवस्था की एक गतिविधि का उल्लेख भी कीजिए।

(2) रेडियो में उच्चारण हेतु शब्दों के कुछ निर्धारित गुण होते हैं। इनमें से तीन का उल्लेख कीजिए।

12.5 आपने क्या सीखा

रेडियो कार्यक्रम निर्माण

→ रेडियो कार्यक्रम निर्माता के गुण

- जिज्ञासा
- अनुभवजन्य विचारांकन
- विचारों को मूर्तरूप देने की क्षमता
- रचनात्मकता
- शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करने की सामर्थ्य

→ रेडियो कार्यक्रम निर्माण के तत्व

- स्टूडियो
- माइक्रोफोन–एक दिशामूलक, द्वि–दिशामूलक, बहु–दिशामूलक
- ध्वनि प्रभाव
- संगीत
- बनावटी प्रतिध्वनि
- स्वर भ्रंशन
- मानवीय स्वर

→ रेडियो कार्यक्रम निर्माण की अवस्थाएँ

- निर्माणपूर्व अवस्था

टिप्पणी

- निर्माण अवस्था
- निर्माण पश्चात् अवस्था

→ रेडियो हेतु लेखन

- स्क्रिप्ट की महत्ता
- भाषा शैली
- उच्चारण हेतु शब्दों के गुण

12.6 पाठांत प्रश्न

1. रेडियो कार्यक्रम निर्माता हेतु आवश्यक गुणों का उल्लेख करें।
2. निम्नांकित पर संक्षेप में टिप्पणी करें—

   (i) माइक्रोफोन (ii) ध्वनि प्रभाव (iii) संगीत
3. रेडियो कार्यक्रम निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं की व्याख्या करें।
4. उच्चारण हेतु शब्दों के विभिन्न गुणों का वर्णन करें।

12.7 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 (1) देखें खंड 12.1

12.2 (2) देखें खंड 12.1

2. (1) एक–दिशामूलक

   (2) भ्रंशन

   (3) शोरमुक्त स्टूडियो

   (4) स्पॉट प्रभाव

   (5) प्रतिध्वनि

12.3 (1) देखें खंड 12.3

(2) देखें खंड 12.4